गीत

भीम म्हारे तारणहार रै।
म्हारा करगे बेड़ा पार।।

म्हारी हालत भी थी माड़ी,
घर के कोनी रही किवाड़ी,
मिली इब कोठी कार रै।
भीम म्हारे तारणहार रै।।

जात की गाली हम नै खाई,
छुआछूत भीम नै मिटाई,
करा म्हारा उद्धार रै।
भीम म्हारे तारणहार रै।।

दास थे सूदर अर नारी,
सहै थे विपदा घणी भारी,
उभारे सूदर अर नार रै।
भीम म्हारे तारणहार रै।।

जात नै जुल्म घणे ढाए,
भीम पग पग पै खुब रुलाए,
जात की चुभी कटार रै।
भीम म्हारे तारणहार रै।।

विधान बणावण भीम चला,
चाहवै करणा सबका भला,
दिखाई कलम की धार रै।
भीम म्हारे तारणहार रै।।

ऊंच नीच के भेद मिटाए,
इसे कानून भीम नै बणाए,
करे माणस इक्सार रै।
भीम म्हारे तारणहार रै।।

दिया शिक्षा का भीम अधिकार,
पढ़ लिख बढ़गे सूदर नार,
मिटा सारा अंधकार रै।
भीम म्हारे तारणहार रै।।

जन्मदिन भीमराव का मनाए,
परतीमा पै फूल चढ़ाए,
नमन कराँ बारम्बार रै।
भीम म्हारे तारणहार रै।।

करा अहसान भीम नै भाई,
म्हारी सारी विपदा मिटाई,
'भारती' शुक्रगुजार रै।
भीम म्हारे तारणहार रै।।

भूपसिंह भारती बल्डोदिया भवन, आदर्श नगर नारनौल (हरियाणा)

जीवन का उसूल

इंसान को अपने ताक़त का,
जब हो जाता है घमंड।
तो आतंक फैलाता है,
या करने लगता है जंग।
लालच का होने लगता है,
बहुत अधिक विस्तार।
जिन्हें पूरा करने के खातिर
करता है इधर-उधर प्रहार।
बेकसूर जन-जीवों का भी,
बहने लगता है खून।
जंग जितने का रहता है,
उसके सर पर तो जुनून।
संस्कृति और सम्पत्ति का,
करने लग जाता है विनाश।
विकट प्रदूषण की पीड़ा से,
भर जाता भूमि,जल,आकाश।
खून बहाकर,तबाही मचाकर,
आखिर आता है क्या हाथ?
यम का रथ जब लेने आएगा,
क्या ले जाते हैं अपने साथ?
वशीभूत होकर अभिमान के ,
करने लग जाता है भूल।
सबको मरना है एक दिन,
यही है जीवन का उसूल।

जीवन चन्द्राकर लाल गोरकापार, गुंडरदेही(छ.ग.)

मिट्टी का घड़ा...!

अब मिट्टी के घड़ों की मांग है बढ़ी,
धूप जली है धरती भी तपती खड़ी।
लू के थपेड़ों में जल रहा है जहान,
ये घड़ा बना है ठंडक का अरमान।

ना फ्रिज ना बिजली की है दरकार,
धरा माटी में बसता सुकून अपार।
इसकी हर बूंद में ठहराव की बात,
घड़ा रख देता जीवन की सौगात।

सिर पर थामे है उम्मीदों का भार,
चल रही वो लड़की, जैसे त्यौहार।
पसीने में भी हौसलों की है चमक,
मेहनत में छुपी जीवन की दमक।
मिट्टी की खुशबू सहित ठंडा पानी,
यूं सादगी में छिपी सच्ची कहानी।
ये गर्मी चाहे जितनी भी रहें बढ़ती,
मिट्टी के घड़े से ही राहत निकलती।

संजय एम ताराणेकर, इन्दौर-452011 (मध्य प्रदेश)

कैसो शोभत अंग

(वनवासी स्त्रियों का श्रीराम दर्शन)
कुँवर के कैसो शोभत अंग ।
सखी री कैसो शोभत अंग ।
कुँवर के कैसो...........
राम राम ऐसो छवि छाई ,
शोभत कोटि अनंग ।
कुँवर के कैसो...........
कोमल बदन नयन रतनारे ,
रुचिर साँवलो रंग ।
कुँवर के कैसो...........
जटा मुकुट मुनि बसन सुहावन ,
सुन्दरि सुमुखी संग ।
कुँवर के कैसो...........
बायें कंध बिराजत चापा ,
कटि तट कसे निषंग ।
कुँवर के कैसो...........
उपमा खोज शारदा थाकी ,
मति गति हो गइ भंग ।
कुँवर के कैसो...........

अनंग = कामदेव
निषंग = तरकस

ब्रह्मेश्वर नाथ मिश्र आरा, भोजपुर, बिहार

माँ पर केंद्रित दोहे

वसुधा-सी करुणामयी,माँ दृढ़ ज्यों आकाश।
माँ शुभ का करती सृजन,करे अमंगल नाश।।
माँ में सारी सृष्टि है,माँ लगती ब्रम्हांड।
माँ को पढ़ लो पूर्ण हों,रामायण के कांड।।
माँ रोटी,माँ दूध है,माँ लोरी,माँ गोद।
माँ सुख का आधार है,माँ से ही आमोद ।।
माँ सुर,लय,आलाप है,अधरों पर मुस्कान।
माँ सम्बल,उत्साह है,है हर शय की शान।।
माँ सचमुच में देव है,लगती है वह ईश।
माँ के चरणों में झुकें,भगवानों के शीश।।
माँ अवतारों में प्रथम,करती है कल्याण।
माँ से ही उत्थान है,बल पाते हैं प्राण।।
माँ है तो उजियार है,माँ है तो है हर्ष।
माँ है तो हर जीत है,नहीं कठिन संघर्ष।।
माँ जीजा,पुतली वही,नाम यशोदा जान।
कौशल्या बन राम से,जनती पुत्र महान।।
माँ है तो संपन्नता,संतति नित धनवान।
माँ से ही तो स्वर्ग है,माँ से सुत बलवान।।
माँ बिन रोता आज है,होकर 'शरद'अनाथ।
सिर पर से जो उठ गया,आशीषों का हाथ।।

प्रो.(डॉ)शरद नारायण खरे प्राचार्य शासकीय जेएमसी महिला महाविद्यालय मंडला

मापनी मुक्त गजल

कौन जो आदत से मजबूर न हुआ हो।
उससे कभी कोई भी कसूर न हुआ हो।।
बताओ ऐसा कोई आदमी यहाँ है।
जिसका घमंड जरा चूर न हुआ हो।।
कौन है जग में जो भजा हो प्रभु को।
और उसका संकट दूर न हुआ हो।।
है कोई जो चला हो नेक रस्ते पर।
और उसको आदर भरपूर न हुआ हो।।
विरले होते हैं लोग जो धन पाता हो।
और उसे तनिक भी गुरूर न हुआ हो।।
क्या है कोई लाल जो अच्छा किया हो।
और वह जगती में मशहूर न हुआ हो।।
बताओ कोई एक अपराधी का नाम।
जो समाज के लिए नासूर न हुआ हो।।
जिसपर पड़ी हो गुरु की कृपा दृष्टि।
भला वह महफिल का नूर न हुआ हो।।

नरेंद्र सिंह, अतरी, गया जी

राख में छिपी जिंदगी

हर युद्ध की विभीषिका की यह दुखभरी कहानी है
हर आंगन में सन्नाटा है, हर एक कीआंख में पानी है
जहां कभी जीवन बसता था वहां आज बस धुआं है

गहरे शोक की राख ने धरती से अम्बर तक छुआ है
किंतु राख ही वह मिट्टी है, नए बीज जो बोती है
जीवन का सत्य यही है कि राख 'अंत' नहीं होती है

ठंडी पड़ी भस्म से ही होगा फिर साहस का जन्म
टूटे खंडहरों में ही होगा फिर से नवआशा का संगम

शोक की यह स्याह राख फिर उर्वर होकर चमकेगी
मानव की दृढ़ इच्छाशक्ति से फिर मानवता दमकेगी !!!

स्मृति श्रीवास्तव, एवीके न्यूज सर्विस

जन्मदिन विशेष

हमारी प्रिय अंकिता के नाम
आज का दिन है खुशियों का, सजी है हर एक बात,
हमारी प्यारी अंकिता को, जन्मदिन की सौगात।
अजय कहते स्नेह भरे स्वर–
बेटी नहीं, घर की शान हो तुम,
हर रिश्ते में मधुर मुस्कान हो तुम,
जीवन के हर पथ पर बढ़ती रहो,
हमारे आँगन की पहचान हो तुम।
अंजु की ममता कहती है–
बहू नहीं, दिल की धड़कन हो तुम,
हर पल में खुशियों का स्पंदन हो तुम,
सदा हँसती रहो, यूँ ही महकती रहो,
मेरे जीवन की सुंदर बंदन हो तुम।
अर्जुन का स्नेहिल साथ–
जीवन साथी बनकर आई हो,
हर राह में रंगत लाई हो,
तेरे संग हर पल खास लगे,
तुम ही मेरी सच्ची परछाई हो।
आशिमा कहे अपनापन से–
भाभी नहीं, मेरी सखी हो तुम,
हर बात में मेरी हँसी हो तुम,
रिश्तों की इस मीठी डोर में,
सबसे प्यारी कड़ी हो तुम।
अबीर और अमारिया की मासूम बातें–
मम्मा, तुम सबसे प्यारी हो,
हमारी दुनिया सारी हो,
तुमसे ही घर में रौनक है,
हमारी खुशियों की फुलवारी हो।
अंत में सबका एक ही आशीर्वाद–
सपनों की हर राह सजी रहे,
खुशियों की धारा बही रहे,
जीवन में प्रेम, सम्मान और उजाला,
हर दिन तुम्हारा यूँ ही खिला रहे।
जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ, प्रिय अंकिता !

अजय कुमार बियानी इंजीनियर और स्वतंत्र लेखक

थक चुके हैं पाँव अब, थोड़ा ठहरना सीखिए,
उम्र के इस मोड़ पर, स्वयं भी जी लीजिए।
माना कि सारा जीवन, तपती धूप में जल गए,
आपकी ही छाँव में, हम सब खुशी से पल गए।
जब जीविका का भार अब, शासन ने है थाम लिया,
पेंशन की इन किस्तों ने, आर्थिक फिक्र को विराम दिया।
फिर क्यों मन के कोने में, उलझनें पाल रखी हैं?
क्यों आज भी इन आँखों ने, चिंताएँ संभाल रखी हैं?
छोड़िए अब मोह जग का, और घर के ये सब झमेले,
हम खड़े हैं साथ आपके, क्यों लड़ रहे आप अकेले?
तनाव की इन झुर्रियों को, अब चेहरे से हटा दीजे,
सुकून के कुछ पल पिताजी, अपने नाम करा लीजे।

ज्ञान प्रकाश गौड़ उन्नाव उत्तर प्रदेश देवगाँव सफीपुर

संविधान के जनक

डॉ बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर थे संविधान के जनक,
अदम्य साहस दृढ़ता दूरदर्शी नेतृत्व प्रेरक व्यक्तित्व के नायक।
दलितों वंचितों महिलाओं के उत्थान के कहलाए सेवक,
शिक्षित संगठित एकता में रहे जनता के बने संघर्ष के प्रतीक।
भारत देश के सर्वप्रथम संविधान के बने निर्माता,
भीमराव अंबेडकर दलितो शोषितों करोड़ों भारतीयों के जननायक चहेता।
वंचित वर्गों के मसीहा बनकर जातिवाद छुआछूत दूर करे अस्पृश्यता,
भारत के इतिहास में संविधान युग ला दिए ऐसे थे क्रांतिकारी नेता।
शिक्षित रहो संगठित रहो संघर्ष करो अंबेडकर का प्रसिद्ध नारा,
स्वतंत्रता समानता बंधुत्व के गुणों में बसती विचारधारा।
रूढ़िवादी जातिवादी खत्म हो एक पथ में सवार होकर सब कहलाए भाईचारा,
जाति असमानता अस्पृश्यता दूर करके जग में लाई उम्मीदों का उजियारा।
दलितों शोषितों जाति छुआछूत के खिलाफ आवाज उठाई,
समाज में पिछले वर्गों के लोगों का नागरिक हक दिलाई।
भारत के संविधान के साथ चलकर समानता की राह दिखाई,
महाड़ सत्याग्रह काला राम मंदिर आंदोलन से सामाजिक क्रांति लाई।
न्याय आत्म सम्मान संघर्ष से जीने का किया आह्वान,
शोषित वर्गों के बच्चों के शिक्षा का मिले पूरा सम्मान।
मेहनत लगन वृद्धि राष्ट्र की शक्ति समृद्धि का था बड़ा योगदान,
राष्ट्र के निर्माता सबके चहेता संविधान के जनक अंबेडकर का करें हृदय से गुणगान।

नरेश कुमार दुबे सरायपाली जिला महासमुंद छत्तीसगढ़

इन्सानी हक के लिए लड़ने वाले योद्धा

सच की राह
कदम कभी न रुके
दीप जलते

अन्याय के विरुद्ध
स्वर उठते निर्भय
जन जागे

अंधेरी रात
आशा की किरणें
रास्ता दिखाएँ

कमज़ोर हाथ
साहस से भरकर
शक्ति बनें

हक की पुकार
दिलों में गूंजती
दीवार टूटे

संघर्ष की धूप
पसीने की बूंदें
फल बन जाएँ

न्याय की लौ
हर दिल में जले
डर मिटे

मानवता संग
चलते ये योद्धा
इतिहास रचें

डॉ अशोक, पटना, बिहार

लक्ष्य सर्वोपरि

लक्ष्य ही जीवन की सबसे बड़ी सच्चाई है,
इसके बिना हर राह अधूरी और परछाई है।
सपनों से ही बनती है हर उड़ान की परछाई,
संघर्ष की आग ने ही हर मंज़िल दिलवाई।
तूफानों से लड़कर ही साहिल पास आता है,
जो नहीं झुकता, वही इतिहास बनाता है।
जो कल कमजोर थे, आज पहचान बन गए,
जो चलते रहे, वही आसमान बन गए।
डर के सवालों में मत स्वयं को उलझा,
अपने ही ख्वालों में रह मत भटका।
लक्ष्य वही है जो अंधेरों में भी दिख जाए,
हर मुश्किल में जो उम्मीद बन जाए।
पसीने की हर बूंद जब मेहनत में ढलती है,
तभी सफलता की फसल सच में फलती है।
छोटी हार से क्यों तू घबराता है,
गिरकर उठना ही असली जीत दिलाता है।
आज जलेगा तो कल अवश्य चमकेगा,
तेरा संघर्ष ही तुझे आगे ले जाएगा।
उठ, स्वयं को फिर आजमाना है,
हर हाल में बस लक्ष्य को पाना है।

...दयाराम साहू ग्राम-डौकाबांधा (बंजारी) जिला-कबीरधाम (छत्तीसगढ़)

भाई-बहन: आशीष और लक्ष्मी

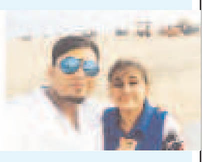

आशीष और लक्ष्मी, एक दूजे की पहचान,
रिश्ता नहीं सिर्फ, जैसे एक ही जान।
हँसी में साथ, ग़म में भी कंधा बन जाते,
एक के आँसू, दूसरे की आँखों में आ जाते।
चोट अगर एक को लगे, दर्द दोनों सहते हैं,
दिल के हर एहसास को, चुपचाप कहते हैं।
ख्याल ऐसे रखते, जैसे खुद से भी बढ़कर,
रिश्ता ये अनमोल, हर रिश्ते से ऊपर।
न कोई शिकायत, न कोई दूरी की रेखा,
एक-दूजे के बिना अधूरी हर एक देखा।
आशीष की हँसी में लक्ष्मी की मुस्कान,
लक्ष्मी की खुशी में बसता आशीष का अरमान।
ईश्वर से बस इतनी सी दुआ करते हैं,
ये प्यार यूँ ही सदा यूँ ही बरकरार रहते हैं।

ऊषा शुक्ला इफ़को आँवला बरेली यूपी

बाल विवाह

सिर पर बाल थे,तो बोले अभी तो तू बच्चा है,
थोड़ा और रुक जा,अभी ये जीवन कच्चा है।
उम्र बढ़ी अब बाल झड़े, तब सबने ये माना।
अब तो शादी कर ले,वरना रह जाएगा बेगाना।
अब तो लगता है कि भारतीय समाज की यही चाह है।
सिर पर बाल रहते शादी कर लेना ही बाल विवाह है।

-अनिल कुमार मिश्र विज्ञ

तुम्हारी चाहत ...

जैसे कोई धूप में चलता हुआ बटोही
टुकड़ा भर घनी छांव मांगा करता है।
जैसे चकोर चांद की हसरत में रात से
प्रियतम चांद को मांगा करता है।
जैसे प्यास से तड़पता पपीहा बादलों से
दो बूंद पानी मांगा करता है।
जैसे गमले में कुम्हलाया पौधा माली से जीने के लिए
धूप हवा पानी मांगा करता है।
जैसे घुप्प अंधेरों में खोया हुआ कोई बटोही
खुदा से उजली भोर मांगा करता है
मैं टहलता रहता हूँ ख्वाबों के दरीचे में और वैसे ही
दुआओं में सिर्फ तुम्हें मांगता रहता हूँ।

अशोक दर्द डल्हौजी जिला चंबा हिमाचल प्रदेश

राष्ट्रीयता

राष्ट्र प्रेम की भाव जगा दीजिए
ऐसा रहस्य हमें सिखा दीजिए।।
एकता का पाठ पढ़ा कर सबको
घृणा राग द्वेष सब मिटा दीजिए।।
अनेकता में एकता है हमारी संस्कृति
यह बात सारे दुनिया को बता दीजिए।।
मां भारती आप से है एक आग्रह
चित मे समर्पण भाव? जगा दीजिए।।
लक्ष्य मार्ग पर कदम ना रुके कभी
ऐसे शक्ति तन मन मे जगा दीजिए।।
भारतीयता का उपवन सजा कर
राष्ट्रीयता का सुमन खिला दीजिए।।
जात धर्म का ना हो कहीं खाई
ऐसा समरस भारत बना दीजिए।।
सनातन की सबको राग सुनाकर
समाज को एक हार बना दीजिए।।
सारे जात - धर्म को ताक में रखकर
जय हिन्द की नारा सब लगा दीजिए।।

लक्ष्मीनारायण सेन खुटेरी गरियाबंद (छ.ग.)

मेरे शिव ही मेरे ताबीज़ है

सारे ताबीज गले में पहन कर देख लिए मैंने,
दुनिया के हर दर पर सिर झुका कर देख लिया।
मन की व्याकुलता कहीं भी शांत न हुई 'नेहा',
थक हार कर आखिर में तेरा ही नाम लिया।
न कोरी रस्मों में मिला,न दुनिया के मेलों में,
सुकून मिला तो बस तेरी भक्ति के रेले में।
सच्चा चैन तो बस तेरे ही दीदार में मिला,
जैसे महादेव!अमृत मिला हो ज़हर के प्याले में।
तेरी चौखट पर आकर हर दर्द जैसे सिमट गया,
भय का जो काला बादल था,पल भर में छँट गया।
अब न ताबीज की हसरत,न धागों का सहारा है,
इस डूबती नेहा की नैया का,तू ही किनारा है।
हर सांस में बस तेरी ही इबादत का नूर है,
शिव नाम से ही मिटा दिल का हर फितूर है।
मेरी खामोशियों को भी तू खूब पहचानता है,
मेरे मन की हर व्यथा मेरा भोला ही जानता है।
तेरे चरणों में अर्पण ये नेहा का सारा जीवन हो,
कण-कण में बस तेरा सुमिरन,तेरा ही वंदन हो।
दिखा दे बस एक झलक,कि और कुछ न चाहूँ मैं,
तेरी भक्ति की मस्ती में ही अब खुद को भुलाऊँ मैं।

नेहा कुमारी

बाद में 'बाद' ही कहाँ बच पाता है

बाद में 'बाद' ही कहाँ बच पाता है,
अपनी मुस्कुराहट का हिसाब भी अब, औरों से मिल पाता है।
अपना दर्पण भी अब टूटा-सा दिखता है,
खुद को समझने का मन फिर कहाँ होता है?
भीगी पलकें, तन्हा रातें,
सब कुछ बिखरा-बिखरा सा लगता है।
बाद में 'बाद' का वजूद ही नहीं रहता,
आज छूटा हुआ कल की चिंताओं में घिरा मिलता है।
जीवन के इस जोड़-तोड़ में,
जीवन गुजरता हुआ ही मिलता है,
वक़्त की इन बेड़ियों में,
मन हर पल जकड़ा रहता है।
तब अंतरमन की आवाज़ भी धीमी पड़ जाती है,
और शोर में ही खुद को ढूँढ़ने की आदत सी हो जाती है।
उस समय लगता है–
कोई साथ क्यों न था?
इन उलझनों से छुटकारा क्यों न था?
दो पल की ज़िंदगी बस काटने की होड़ बन गई थी,
सच तो ये है–अपना ही कुछ नहीं बचता है।
वक़्त पर वक़्त की आरज़ू खो जाती है,
अच्छे-बुरे का भी फिर कहाँ होश रहता है?
लोगों की खातिर जीते रहे,
सबको मनाते रहे,
इसी भागदौड़ में
सारा ध्यान भटकता रहा।
तिनका-तिनका जो जीवन संजोया था,
वो भुला-बिसरा एक किस्सा बन जाता है।
अंत में बस यही टीस उठती है–
अपने लिए, भी कुछ सोचा होता,
अपने मन का भी कभी किया होता।
थोड़ा तो खुद को संभाला होता,
गिरकर एक बार तो अपनी खातिर उठा होता।
इतनी बेतहाशा भागदौड़ क्यों थी?
ऐसा क्या था, जो पीछे छूट रहा था?
अपने ही दर्पण में अपना अक्स क्यों न था?
अपने नाम से पहले, औरों का नाम क्यों जुड़ा था?
पर अब–
देर से पहले ही सही, एक नई शुरुआत होगी,
अपने हिस्से की भी एक नई उड़ान होगी।
जो छूट गया, उसे अब भूलते हैं,
खुद से फिर एक बार मिलते हैं।
थोड़ा ठहरकर,
बहुत कुछ संभलते हैं,
अपनी कहानी अब अपने ही हिसाब से लिखते हैं।
एक कोशिश और करते हैं–
अपनी मुस्कुराहट का,
अब खुद ही ध्यान रखते हैं।

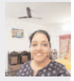

- अनुपमा आर्य - आगरा उत्तर प्रदेश

तुम होंगे बिल्कुल वैसे

तुम होंगे बिल्कुल वैसे, मैं सोचता हूँ जैसे।
तुम्हारे भी होंगे वही ख्वाब, मैं देखता हूँ जैसे।।
तुम होंगे बिल्कुल वैसे-------------------------।।

होंगे चांद, तारें, बहारें, तुम्हारे देखें ख्वाब में।
तुम चाहते होंगे वही रोशनी, मैं चाहता हूँ जैसे।।
तुम होंगे बिल्कुल वैसे----------------------।।

ना कोई गम हो दिल में, हसीं हो दिल वह हमेशा।
खुशी ताकि तुमको मिले वैसे ही, मैं चाहता हूँ जैसे।।
तुम होंगे बिल्कुल वैसे-------------------------।।

सूरत आँखों में किसी और की, नहीं हो भूलकर भी।
खुदा से मांगें तुम भी वही दुहा, मैं माँगता हूँ जैसे।।
तुम होंगे बिल्कुल वैसे-----------------------।।

निराश करें नहीं वो, मुसीबत हो गर कभी जिंदगी में।
निभाये साथ उम्रभर वो भी वैसे, मैं चाहता हूँ जैसे।।
तुम होंगे बिल्कुल वैसे--------------------------।।

गुरुदीन वर्मा उर्फ जी.आज़ाद तहसील एवं जिला-बारां(राजस्थान)

इस शहर के लोग

कितने अलबेले मस्त हैं ,बीकानेर शहर के लोग ।
गपशप पाटा रसी में जीते हैं , इस शहर के लोग।।
इस शहर की तासीर में ,मिश्री सा अपनापन है ।
पल की संगत में अपनापन देते,इस शहर के लोग।।
कितने भोले कितने अल्हड़ हैं मरुधरा के ये लोग ।
अपनी मस्ती में मस्त रहते हैं ,इस शहर के लोग।।
वीर-धीर-गंभीर पराई पीर का ये अलबेला है शहर ।
हर गली हर मोड़ पलके बिछाते, इस शहर के लोग ।
सुरों की सरिता से भी सिंचित , इस शहर के लोग ।
स्वर लहरियाँ बिखेर रहे देश में ,इस शहर के लोग।।
जात - पांत - भेद से कोसों दूर है ,इस शहर के लोग।
तीज-त्यौहार आपस में मिल मनाते,इस शहर के लोग।।
भाषा - साहित्य व संस्कृति से लबरेज़ है यह शहर ।
अपने - अपने हुनर के धनी है , इस शहर के लोग ।
भाईचारा अगर देखना है तो , बीकानेर आ के देखो ।
इंसानियत का पैगाम भी देते हैं , इस शहर के लोग ।।
नाचीज़ बिकानेरियत पर हम सब नाज़ करते आए हैं ।
दुनियां में अमन-चैन की मिसाल है ,इस शहर के लोग ।।

मईनुदीन कोहरी नाचीज़ बीकानेरी 9680868028